ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS

Globus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक
डॉ. अश्विनी महाजन
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक
डॉ. प्रसून दत्त सिंह
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी
डॉ. फूल चन्द
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

मॉरीशस में श्रीराम कथा एवं भारतीय संस्कृति

उमेश कुमार सिंह

Associate Professor, Department of Hindi and Comparative Literature, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Gandhi Hills, Wardha-442001 (Maharashtra) Bharat

सारांश :- श्रीरामचरितमानस और श्रीराम कथा ने भारत में ही नहीं अपितु मॉरीशस की संस्कृति को भी एकरूप देने में ऊर्जा प्रदान की है। श्रीरामचरितमानस में वर्णित राम और सीता की कथा भारत के हिंदुओं के लिए अत्यंत अर्थपूर्ण होने के साथ-साथ अन्य देशों में बसे हिंदुओं और विद्वत समाज के लिए भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। आज श्रीरामकथा को वैश्विक आख्यान कह सकते हैं क्योंकि आज विश्व जनमानस के लिए श्रीरामचरितमानस और श्रीरामजी की कथा, आशा, विश्वास, और आस्था के प्रतीक पुण्य ग्रंथ के रूप में केन्द्रीय महत्व का विषय रखती है। आज श्रीरामकथा के प्रभाव के कारण मॉरीशस में भारतीय संस्कृति के विस्तार को गति प्राप्त हुई है।

प्रमुख शब्द/Key words :- संस्कृत-Culture, अर्थपूर्ण-Meaningful, लोकप्रियता-Popularity, बन्दरगाह-Harbor, परहित-Other benefit, आपद-Disaster, परखियों-To Judge, अभिमानी-Conceited, सुरसरि-Divine river, कुटिल-Crooked, भगिनी-Sister.

शोध प्रविधि/Research Methodology:- इसमें शोध पत्र लिखने के लिए तथा शोध को उसके अंतिम लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए आधुनिक आलोचनात्मक और समीक्षात्मक शोध प्रविधियों को प्रयोग किया जाएगा।

प्रवासियों ने श्रीरामचरितमानस के द्वारा अपनी संस्कृति, भाषा, संस्कार, आस्था एवं विश्वास की रक्षा की है। श्रीरामचरितमानस और राम कथा ने भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण एशिया के साथ-साथ पश्चिम की दुनियाँ के देशों की संस्कृति को भी एकरूप देने में शक्ति प्रदान की है।

श्रीरामचरित मानस में वर्णित राम और सीता की कथा भारत के हिंदुओं के लिए अत्यंत अर्थपूर्ण होने के साथ-साथ दूसरे देशों में बसे हिंदुओं और विद्वत समाज के लिए अर्थपूर्ण होने के साथ अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम आज रामकथा को वैश्विक आख्यान कह सकते हैं क्योंकि आज विश्व जनमानस के लिए श्रीरामचरितमानस और श्रीरामजी की कथा आस्था और केन्द्रीय महत्व का विषय है।

इस प्रकार श्रीरामचरितमानस आज पूरी दुनियाँ में फैले हुए हिंदुओं और विद्वत जन समाज जिनमें मूलरूप से भूटान, नेपाल, वर्मा, और प्रवासी गिरमिटिया देशों में मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद एंड टूबेगो, के साथ पाकिस्तान, बंगाला देश, संयुक्त राज्य अमरीका आदि तक के देशों फैली हुई हैं। इसके अतिरिक्त थाईलैंड, इन्डोनेशिया, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, यूरोप के अनेक देश सम्मिलित होते हैं। मेरी दृष्टि में इस तरह से श्रीरामचरित मानस और राम कथा वैश्विक आख्यान सिद्ध होने के गुण विद्यमान हैं।

डब्लू डगलस पी. हिल- हिल ने मानस की अंग्रेजी भूमिका के रूप में तुलसीदास के बारे में अनेक विचार व्यक्त किए हैं। भक्त सिंधु और वृहद रामायण के महात्म के अनुसार राजापुर के निकट हस्तिनापुर में, जनश्रुतियों के अनुसार चित्रकूट में, तथा रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार सूकर क्षेत्र या सोरों में पैदा हुये थे। यह स्थान बांदां जिले में यमुना तट के निकट बसा हुआ है उनका जन्म 1532 में हुआ था।

तुलसीदास ने बृजभाषा त्यागकर अवधी में मानस की रचना की है। इसका कारण राम की कथा अवध में जन्मे श्रीराम की हो सकती है। उस दौर में और आज भी अवध जनपद की भाषा अवधी है। मेरी दृष्टि में श्रीरामचरितमानस सर्वोत्तम धार्मिक ग्रंथ है। जिसकी रचना चौतशुक्ल नवमी 1603 वि में हुई। जिसको तैयार करने में 2 वर्ष 7 महीने और 26 दिन लगे। यह ग्रंथ संवत 1633 (1576 ई.) में श्रीराम विवाह के दिन सम्पूर्ण हुआ था। गीता प्रेस गोरखपुर के हनुमान प्रसाद पोद्दार के द्वारा भी श्रीरामचरितमानस के पूर्ण होने की यही तिथि दी गई है। पोद्दार: सं.1633 श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ सं.970।

प्रो बरान्नीकोव रूस के विद्वान हैं जिन्होने श्रीरामचरित मानस को रूसी भाषा में रूपान्तरण किया है। उनकी पुस्तक की भूमिका-भास का, हिंदी अनुवाद में, राहुल साकृत्यायन की दृष्टि में तुलसी हमारी हिंदी के ही नहीं, भारत के श्रेष्ठ कवि हैं। यही नहीं वह विश्व के गिने-चुने कवियों में से हैं। उनकी लोकप्रियता के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। हिंदी-क्षेत्र की सीमा बतलाने के लिए यह कहना पर्याप्त है "जहां-जहां तुलसी की रामायण और उनका पद चलता है, वही हिंदी क्षेत्र है। तुलसीदास ने सबसे पहले हमारे देश के जन-साधारण के हृदय को जीता, जिससे स्पष्ट होता है, उनकी कृतियों में लोक-साहित्य का अद्‌भुत गुण देखा जा सकता हैं। आज तुलसी दास की कीर्ति-कौमुदी विश्व के अन्य सभ्य देशों में भी फैल चुकी है। आज श्रीरामचरित मानस को भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में बड़े भक्ति भाव के साथ पढ़ा सुना और भक्तिभाव के साथ गया जाता है।

मॉरीशस के लोगों ने अपने धर्म, संस्कृत एवं हिंदी की रक्षा एक मात्र श्रीरामचरित मानस के पठन-पाठन और अध्ययन अध्यापन से की थी। उस देश में बैठका का स्वरूप आज तक जीवित रूप में देखा जा सकता है। बैठका में 19 वीं शताब्दी के मध्य में भारत से दूर, हिंद महासागर में एक मोती के समान चमकता द्वीप लघु भारत/मॉरीशस है। गिरमिटिया आप्रवासी भारत से प्रवास के समय अपने साथ कुछ धार्मिक ग्रन्थों में श्रीरामचरित मानस, गीता, आल्हा आदि पुस्तकों के साथ भारत की मिट्टी नीम, नीबू, लीची, बरगद और पीपल के बीज इत्यादि अपने साथ लेकर गए थे। यह सब भरतवंशी पूर्वजों, पुरखों की यादें और उनकी दौलत थी।

मॉरिशस वासियों ने एकमात्र पुस्तक श्रीरामचरित मानस से अपने देश को अंग्रेजों से स्वतंत्र ही नहीं करवाया अपितु उन्होंने अपने धर्म, संस्कृत और हिंदी की रक्षा भी की थी। आज से 200 वर्ष पूर्व उन्होंने एक नारा दिया था। हिंदी गई तो संस्कृत गई। इसके साक्ष्य 1934 में प्रकाशित दुर्गा नामक हस्तलिखित पत्रिका में देखे जा सकते हैं।

मॉरिशस के गिरमिटिया आप्रवासियों ने श्रीरामचरित मानस के एक बल और एक आस विश्वास के द्वारा अंग्रेजों के राज्य में असह्य पीड़ादायक यातनाओं का सामना करते हुए आज तक वहाँ हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृत, आस्था और विश्वास एवं आचार-विचारों को सहेजकर रखा है। आज वहाँ गिरमिटिया आप्रवासियों के वंशजों की पाँचवीं और छठी पीढ़ी निवास कर रही है।

भारत से गए गिरमिटिया पूर्वजों को श्रीरामचरित मानस के पाठ के द्वारा परदेश में सदैव आशा और विश्वास का संबल प्राप्त होता रहा। झोपड़ी के घरों में, तूफानों का सामना करते हुए, इसी उम्मीद में जीवन गुजार दिया, कभी तो बुरे दिन जायेंगे और शुभ दिन आएंगे। तुलसीदास श्रीरामचरित मानस में देश की जनता के पूर्ण सुख की कामना करते हैं। यह उनके विशाल हृदय के अतिरिक्त और कौन सोच सकता था। यह उनका विश्वास था। राम राज्य में छोटी अवस्था में मृत्यु नहीं होती, न किसी को पीड़ा होती है। सभी के शरीर सुंदर और नीरोग हैं। न कोई दरिद्र है, न दुखी है और न दीन ही है। न कोई मूर्ख है और न शुभ लक्षणों से हीन है।

"अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना"

गिरमिटिया आप्रवासी कुली मजदूरों को जहाज में अमानवीय ढंग से अंग्रेज भरकर ब्रिटिश देश मॉरीशस ले गए थे। उन्हें पत्थर के नीचे सोना निकलने का धोखा देकर दिया था। उन दिनों भारतीय मॉरिशस को मारीच या मिर्च देश भी कहा करते थे। भारतीय मजदूरों की परेशानी जहाज बन्दरगाह छोड़ने के साथ से ही प्रारम्भ हो गई थीं। मार्ग की अनेक पीड़ाओं को सहन करते हुए यात्रा के दौरान एक दूसरे को परेशानियों में सहयोग करते हुए, एक दूसरे के जहाजिया धर्म भाई बन गए थे। दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है। दूसरों को दुःख पहुँचाने के समान कोई नीचता (पाप) नहीं है। इसे समस्त पुराणों और वेदों का निचोड़ (निश्चित सिद्धान्त) है। ज्ञानी और पंडित लोग इस बात को भली भाँति जानते हैं।

"पर हित सरिस धर्म नहि भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥
निर्नय सकल पुरान बेद कर। कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर॥"

धीरज अर्थात धैर्य, पत्नी, मित्र और धर्म की सही परीक्षा उस समय ही की जा सकती है, जब व्यक्ति पर कोई विपत्ति आई हो। इनसान के अच्छे समय में तो हर कोई उसका साथ देता है किन्तु जो बुरे समय में साथ देता, सच में वही आपका सच्चा साथी और मित्र होता है। जीवन में सबसे ज्यादा भरोसा उसी इंसान पर करना चाहिए।

तुलसीदास श्रीरामचरितमानस में कहते है। धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री-इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है। वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, बहरा, क्रोधी आदि अत्यंत ही दीन होते हैं।

"धीरज, धर्म, मित्र, अरु नारी, आपद काल परिखिअहिं चारी॥
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना॥"

श्रीरामचरित मानस की कथा को वहाँ (सत्संग) अर्थात उस सत्संग में हरि कथा सुनी जाय, जिसे मुनियों ने अनेकों प्रकार से गाया और वाचन किया है और श्रीरामचरित मानस का आदि, मध्य और अंत में केन्द्रीय प्रतिपाद्य श्रीराम प्रभु ही हैं।

"सुनिअ तहाँ हरिकथा सुहाई। नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई॥
जेहि महुँ आदि, मध्य, अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना"
"तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही। समुझि परइ जस कारण मोही॥
जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥"

इस प्रकार सर्वहित ही श्रीरामचरितमानस का एकमात्र लक्ष्य परिलक्षित होता है जिसके द्वारा हिन्दू असक्ति से, शक्ति की ओर, अशांति से शांति की ओर अग्रसर हुए हैं। तुलसीदास श्रीरामचरितमानस में राम कथा कहकर सबकी भलाई, सबके कल्याण का लक्ष्य मानने वाले कवि के रूप में उपस्थित हुए हैं। तुलसीदास कहते हैं जब जब धर्म ह्रास होता है उस समय नीच प्रवृत्ति और अभिमानी राक्षस बढ़ जाते हैं।

कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कह हित होई
राम सुकीरति भनिति भदेसा असमंजस अस मोहि अँदेसा॥"

विश्व में ऐसी कृतियाँ कम ही हैं जो सबके लिए समान रूप से प्रिय हो। ग्रियर्सन ने श्रीरामचरित मानस को उत्तर भारत के लोगों के लिए बाइबल कहा था। यह ऐसा ग्रंथ है जो राजा के महल और भिखारी की कुटिया को समान रूप से सुशोभित करता रहा है, करता रहता है और सदैव करता रहेगा।

श्रीराम चित्रकूट सभा में सबसे पहले माता कैकेयी से मिलते हैं। उन्हें सारी बातों के लिए विधि, कर्म और काल को दोष देकर सांत्वना देते हैं। कुटिल कैकेयी मन ही मन ग्लानि (पश्चाताप) से गली जाती है। किससे कहे और किसको दोष दे। और सब नर नारी मन में ऐसा विचारकर प्रसन्न हो रहे हैं कि [अच्छा हुआ जानकीजी आने से] चार (कुछ) दिन और रहना हो गया है।

"गरइ गलानि कुटिल कैकेई। काहि कहै केहि दूषनु देई॥
अस मन आनि मुदित नर नारी। भयउ बहोरि रहब दिन चारी"॥

दृष्टिकोण

तुलसीदास ने श्रीरामचरित मानस में चित्रकूट सभा का अद्‌भुत उल्लेख किया है। यह आध्यात्मिक सभा है हृदय की इतनी उदात्त वृतियां, एक साथ उद्‌भावना तुलसी के विशाल मानस में ही संभव थी। जहां राजा और प्रजा, गुरु और शिष्य, भाई और भाई, माता और पुत्र, पिता और पुत्री, श्वसुर और जमातृ/जमाई, सास और बहू, क्षत्रिय और ब्राह्मण, ब्राह्मण और शूद्र सभ्य और असभ्य के परस्पर व्यवहारों के प्रसंग उपस्थित हुये हैं।

"अनुज बधू, भगिनी सुत नारी। सुनु सठ सम कन्या ए चारी
इनहि कुदृष्टि विलोकहि जोई। ताहि बधें कछु पाप न होई।।"

आज के संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास की सबसे बड़ी प्रासंगिकता एक पंति में सिद्ध की जा सकती है।

"तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन मांही
जननी सम जानहु पर नारी। धनु पराउ बिष ते बिष भारी"

आपको छोड़कर जिनके दूसरी कोई गति (आश्रय) नहीं है, हे रामजी आप उनके मन में बसिए जो पराई स्त्री को जन्म देने वाली माता के समान जानते हैं और पराया धन विष से भारी विष है। इस संदर्भ में पराई स्त्री को माता के समान और दूसरों के धन को विष से भी विषैला मानने और समझने पर आज उत्पन्न होने वाली सभी समस्याओं का अंत किया जा सकता है।

भारतवंशियों ने मॉरीशस में कैसे श्रीरामचरितमानस के द्वारा अपनी संस्कृति, भाषा और संस्कारों को बचाने में सफलता करने के साथ-साथ उन्होने अपने देश को भी आजाद करवाया। भारतवंशियों को अधिक मजदूरी और पत्थर खोदकर सोना निकलने की बात कहकर धोखे से लाया गया था।

"सोनवा के खातिर गइली विदेशवा, गलि गैलन सोनवा सरीर" अपने दुख और असहनीय कराह, पीड़ा को व्यक्त करते हुये गिरमिटिया मजदूर भोजपुरी में कहता है। उनकी इस आत्मग्लानि, पीड़ा और संवेदना को वे ही समझ पा सकते हैं जिन्होने यह पीड़ा भोगी होगी। मैं और मेरे जैसे सभी जहाजिया भाई सोने के लिए विदेश आए थे। मुझे सोना तो नहीं मिला किन्तु अब मेरा सोने जैसा शरीर गल चुका गई। भारतीय जाति व्यवस्था-मॉरीशस में जाते समय जहाज की पीड़ा के द्वारा जहाजिया भाई बनकर मिट गई थी। उनके व्यावहारिक ज्ञान के रूप में जहाजिया भाइयों के साथ किसी न किसी रूप में हिंदी भाषा, उनके साथ आई थी। वे अपने साथ अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपने धर्म ग्रंथ साथ लाये थे। उन धर्मग्रन्थों में रामचरित मानस, हनुमान चालीसा, संतनामा। कबीर की शाखियाँ, आल्ह खंड प्रमुख थे। यह उनकी धरोहर थी। इन्ही ग्रन्थों की भाषा मॉरीशस द्वीप में हिंदी के रूप में आई।

आज मॉरीशस देश में पर्यटन के रूप में जाने पर भारतीय संस्कृत, भारतीय धर्म और मंदिर, भारतीय परिधान/वेश-भूषा, भारतीय खान-पान, भारतीय रीति-रिवाज, तीज त्योहार एवं पर्व, गंगा स्नान चहुं ओर परिलक्षित होते हैं। हमारे पूर्वज मॉरीशस में शर्तबंद अथवा गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरीशस में 1834 से लाने प्रारम्भ हुये थे, और यह सिलशिला 1945 तक जारी रहा था। यहाँ पर 19 वीं सदी का सबसे बड़ा विस्थापन हुआ था जिसमें 4 लाख पचास हजार मजदूरों का यहाँ लाकर बसाया गया था। आज मॉरीशस वासियों की जनसंख्या 14 लाख हो गई है। हमारे पूर्वज सामाजिक थे। वे दिन भर खेतों में कठोर परिश्रम करते थे और फिर शाम के समय सभी साथ मिलते थे, किस्सा- कहानियाँ सुनाते थे। यह जगह बैठका नाम से जानी जाती थी, एक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था की तरह ही थी। जहां वे लोग एक दूसरे से मिलते थे। आज इसका परिणाम है।

मॉरीशस में हर तरफ भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं। यहाँ भारतीय सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और परंपरा के अनुसार ही भारतीय त्योहार मनाए जाते हैं, पूजा-पाठ, कथा-वार्ता, यज्ञ-हवन आदि करते हैं। शादी व्याह रचाते हैं।

भारत वासियों की तरह ही पहनावा कुर्ता-धोती, साड़ी, सलवार सूट पहने नर-नारियां हर तरफ परिलक्षित होते हैं। ऐसा नहीं लगता है। हम भारत में नहीं हैं। होली दिवाली, महाशिवरात्रि गंगा स्नान, दुर्गा पूजा, आदि बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाये जाते हैं। आज उस समाज में भारतवंशियों की एक बड़ी विशेषता लड़की और लड़के की शादी में दहेज न लेना और देना कही जा सकती है।

मॉरीशस में गंगा स्नान से तात्पर्य समुद्र पर समुद्र स्नान से होता है। सभी हिन्दू छुट्टी लेकर नहाने जाते हैं और खूब परिवार के साथ एंजॉय करते हैं। समुद्रतट पर भारत की तरह ही छोटे-छोटे तम्बू लगाए जाते है और अपनी धोतियाँ बांधकर एक घेरा बनाते हैं। उसी में अपना खाना और कपड़े रखते है।यह सिलसिला शाम तक चलता है। शाम को सभी अपनी अपनी कार लेकर अथवा बस द्वारा घर की ओर प्रस्थान करते हैं।

मॉरीशस में गंगा तालाब पर आदमकद शिवजी की मूर्ति स्थापित की गई है। शिव रात्रि का उत्सव बड़े भक्ति भाव और धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। उस समय मॉरीशस मॉरीशस नहीं भारत का हिस्सा नजर आता है। गंगा तालाब पर ही विशालकाय शेरावाली दुर्गा की मूर्ति स्थापित की गई है। शिव मंदिर और हनुमान मंदिर प्रत्येक गाँव में, प्रत्येक घर में बनाया जाता है। और उस पर ध्वजा लगीई जाती है। होली के उत्सव के अवसर पर होली मिलन का आयोजन किया जाता है। शनि मंदिर, गणेश मंदिर, भोजपुरी और दाल-पूरी मिलती है। श्रीराम मंदिर, श्रीकृष्ण मंदिर, श्रीहरेकृष्ण मंदिर भी स्थापित किए गए हैं।

मॉरीशस में बोली जाने वाली भाषाएँ- हिंदी, भोजपुरी, मराठी, तमिल तेलगू, भाषा के साथ इंग्लिश, फ्रेंच, चीनी, अफ्रीकी आदि भाषाएँ बोली जाती है क्रिओल भाषा बहुतायत में बोली जाती है। प्रत्येक भाषा- भाषी समूह के अपने मंदिर, और बैठका हैं। प्रत्येक भाषा के शिक्षक हैं, वहाँ पर बहुत से तमिल स्थापत्य के मंदिर भी हैं।

प्रथम पत्र हिंदुस्तानी नाम से 1909 में हिंदी और अंगेजी में प्रकाशित हुआ। इस देश में स्वास्थ्य और शिक्षा निशुल्क प्रदान की जाती हैं। प्रत्येक 60 वर्ष पूर्ण करने के बाद राष्ट्रपति और आम नागरिक को 6000 पेंशन प्रदान की जाती है।

हिंदी बैठका का इतिहास भी भारतीयों की तरह ही बहुत पुराना है। पहले हिंदी की पढ़ाई बैठका में होती थी, जिसका आगे चलकर पाठशाला नाम से कहने लगे। वहीं सायकाल में हिंदी की पढ़ाई होती थी। जहां बैठका नहीं होती थी, वहाँ बच्चे पेड़ों के तले बैठकर हिंदी सीखते थे। बैठका के अतिरिक्त 253 हिंदी स्कूल हैं। जो सरकार चलती है। मॉरीशस में आर्यसभा की स्थापना 1903 में हुई। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के कहने पर भारत से मणिलाल डॉक्टर मे मॉरीशस में गए थे। उन्होने भारतियों कि मदद कि तथा एक हिंदी पत्र हिन्दुस्तानी प्रकाशित किया था। आर्यसभा मॉरीशस द्वारा भी हिन्दी की चर्चा

रेडियो मॉरीशस से प्रसारित की जाती है। आप्रवासी घाट जब हमारे पूर्वजों ने जब मॉरीशस में पहला कदम रखा था। उस स्थान को आप्रवासी घाट के रूप में उस स्थान को पूर्वजों की याद के रूप में सहेजकर रखा गया है। और प्रति वर्ष गिरमिटिया वंशजों की संताने अपने पूर्वजों को 2 नवंबर को याद करती हैं। तथा प्रतिवर्ष उनकी आत्मा की शांति के लिए यज्ञ किया जाता है। यह कार्यक्रम सरकार द्वारा आयोजित किया जाता है। गंगा तालाब कैसे बना यह बड़ी और विशिष्ट बात है। मॉरीशस के सबसे ऊंचे भाग पर ज्वालामुखी का क्रेटर था। ज्वालामुखी प्रतप्राय था। उसमें हवन करके और भारत की गंगा नदी से गंगाजल ले जाकर उसमें डाला गया था। उसके बाद उसका नामकरण गंगा तालाब के रूप में किया गया। मॉरीशस वासी भक्तिभाव के साथ पूरे देश के लोग बूढ़े और बच्चे सभी पैदल यात्रा करते हैं। जल भरकर लाते हैं। और अपने गाँव के शिव मंदिर में जलाभिषेक करते है। शिव रात्रि के अवसर पर पाँच दिन तक इस दौरान पूरे देश में भक्तिमय माहौल रहता है। लोग-खाने के लिए मुफ्त में भोजन, फल, मिनरल वॉटर की बोतल और सोने के लिए स्थान उपलब्ध करवाते हैं। मॉरीशस गीत गवाई को यूएनओ द्वारा मान्यता: मैं जब मॉरीशस में 2016 में पहुंचा था। उसी वर्ष 2016-17 में गीत गवाई को संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ) द्वारा राष्ट्रीय धरोहर के रूप में मान्यता दी गई थी। यह भारत और मॉरीशस दोनों देशों के लिए गर्व की बात है। यह भारतीय संस्कृति का रूप है। असल में गीत गवाई भारत में शादी विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले संस्कार गीत ही हैं। यह भारत के पूर्वजों के वंशज स्त्रियाँ द्वारा मौखिक परंपरा के रूप में आज तक याद करके और सहेजकर रखा गया है।

निष्कर्ष :- श्रीरामकथा की ज्ञानबेल के प्रकाश पुंज की सामर्थ्य के फलस्वरूप मॉरीशस में अपनी संस्कृति और परंपरा की रक्षा के लिए प्रथम पहल श्रीरामचरितमानस एवं दुर्गा हस्तलिखित पत्रिका में "हिंदी गई तो संस्कृति गई" को मातृ भाषा का ज्ञान अतिआवश्यक समझकर ही श्रीरामचरितमानस के पाठ से हिंदी पाठ का सुभारंभ किया था।

यह सोचकर उन्होने मॉरीशस की विपरीत संस्कृति वाले देश में 'बैठका' का निर्माण किया था। हमारे पूर्वज उसी बैठका में श्रीरामचरितमानस का पाठ और सत्संग बड़े भक्ति भाव के साथ किया करते थे तथा उसी स्थान पर हिंदी पठन-पाठन की व्यवस्था हुआ करती थी। मॉरीशस के बैठका में बच्चे, युवा, वयस्क एवं वृद्ध सब हिंदी उत्सुकता के साथ पढ़ना अपना सौभाग्य समझा करते थे। मॉरीशस में भारतीय त्योहार, पर्व, जन्मोत्सव, मुंडन, विवाह संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कारों का पालन बड़े विधि विधान के साथ किया जाता है। इसी का परिणाम है कि भारतवंशियों में आस्था, विश्वास, संस्कार, परम्पराएँ आदि उस देश में प्रचलित ही नहीं हैं, अपितु खूब फल फूल रही हैं। आज भी मॉरीशस, में सभी छात्र एवं छात्राओं के पठन-पाठन की व्यवस्था आर्यसमाज तथा प्रवासी गिरमिटिया देशों की सरकारों द्वारा की जाती है। इस शोध पत्र को पूर्ण विराम तुलसीदासजी के शब्दों में अधोलिखित श्रीरामचरितमानस के दोहा से करना सौभाग्यशाली प्रतीत होता है। जिसका भावार्थ अर्थ इस प्रकार है। चौरासी लाख योनियों में चार प्रकार के (स्वेदज, अंदाज, उभिज्ज जरायुज) जीव जल थल पृथ्वी और आकाश में रहते हैं उन सबसे भरे हुये इस सारे जगत को श्रीसीताराममय जानकार मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम कर शोध पत्र शोध पत्र और वाणी को विराम देता हूँ। (पद:1 पृष्ठ 11)

"आकर चार लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बारी।
सीया राममय सब जग जानी। करऊँ प्रणाम जोरि जुग पानी।।"[10]

संदर्भ (Bibliography) :-

1. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049,पृष्ठ सं 854
2. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 871।
3. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 573
4. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 887
5. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 110
6. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 18
7. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 522
8. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 623
9. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 चौपाई 129, पृष्ठ सं.410
10. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 , गोविंद व्हावान, गीता प्रेस, गोरखपुर-273005, सटीक मझला संस्करण, पृष्ठ सं 11
11. युगेश्वर, तुलसी काव्य की भूमिका, साहित्य भंडार 50 चहचन्द, इलाहाबाद वर्ष 2001
12. रामचन्द्र शुक्ल, गोस्वामी तुलसीदास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली -110002 वर्ष 2008
13. जनार्दन उपाध्याय, तुलसी काव्य में साहित्यिक अभिव्यक्ति, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद वर्ष 2007
14. डॉ शिवप्रिय महापात्र, तुलसी आज के संदर्भ में, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली-110002, वर्ष 2009.

PDF Created Using

Camera Scanner

Easily Scan documents & Generate PDF

https://play.google.com/store/apps/details?id=photo.pdf.maker